

या

क्रैलसवयंयम् ॥ विष्णुजनयाय ॥ खुसवयंयम् ॥ ॥ ॐ
 गियाने किल विद्विसमायं ॥ ॥ ॥ ॐ सवगु ८६६ मि
 एडमा ॥ ५५ वदि १५ बीज १ सथयाने कि पृष्ठक वंग या जुन ॥
 लिखितं, यन्य शहर तथा शावजा वा नाम श्रुतं व सिखा म
 वावपा चाना तथा ॥ हर्वमनियान वाया विया जुत ॥ ॥ ॥ ॥

ASHA ARCHIVES

2701

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ शोभो गुरुमं तु दानं क॥ ॥ ॐ जाकि, वजि, कुर्व, धलक सि,
 धति, ३३, कदामा धि, हामु कु, लं स्व, थग, कला सगया अ, सुलात
 फ, कु, शद द्यायान, ॥ महावाक काय ॥ अथ काय ॥ ॥ ॐ अथ
 वाला हा कल फ वे व सग म नै न्य ग ल कलि उग्र, गुन ग स्व, ३३:

जां प्रविष्य, अमुपाय, वा ३३ कि, ३३, अमा लयां द किं न पा
 ख, संख वर्ष त समिप, ३३ संवला का लम, ३३ उप, ३३ नु ह ३३:
 ३३, ३३ पृ, ३३ पर्व न, ३३ स्वयां प्र, ३३ य स्म न, ३३ वे न नाग सं नि:
 धानि, न पा ल द, ३३, वा ग म स्मा या पर्व कृत, क सि का यां व क्षि म कृ
 त, पु ल म त्या यां उ ग कृत, ३३ वि न्पा रु द व ना नि र्वा सि न स्व ग म

ननाशा ३३ श्रुता सति न श्रुत न दहा यः उपगिरि संनिधौ न
रिणां लमदत् ॥ श्रुतं मधुपुत्रि महानगरे ॥ श्रुतं लका मा निः
निर्वासित ॥ ॥ श्रुतं काय ॥ ॥ ॐ जथागतं तथ गतायां पूर्वगा
मधु सापुत्रिपा नितां दक्षिणा हि मुसं पिनुयात्वा विपत्तिना दत्त
नायां महावला केन का र्वा स्याद्वे नु ॥ श्रुतं काये सां च गवतु पुस

॥ सिद्धि नाविस्व ३३ तथ कुरु चंद्र ॥

यस्य धम ॥ ॥ श्रुतं काय ॥ ॥ सर्व विस्वापाय विष्णु धन महावजा ह
व सर्वतथ गत नृणां धि दृढ क वः व वस्मा र्त्तं का लोका निः
पार मिता वस्त्र पुत्रा मिथ स मुद स भूत न स मय स धम ॥ ॥ श्रुतं ॥
सर्व विस्वापाय पार मिता महावजा ह वत मना अ हि मरा अरु ल
पुष्य ध्व धम ॥ ॥ सर्व विस्वापाय विष्णु धन महावजा ह

धिष्कापुंजा मद्यसद सद्रुत न समय स्वध ॥ **रुतमलानि** ॥ सर्व
 विसवापां य वि श्व ध न स महाव आ हव दसदन रुतया तया
 तमिगा रुतपु जामद्यसमद सद्रुत न समय स्वध ॥ **धमाव**
क्रमन्ता ॥ मुनि १ महाम् विय स्वा ॥ **धम नमन्ता** ॥ सर्व सका
 तपति ३३ ध ध म न ज ग ग न समु ग न स्वरा च वि ३३ ध म हान

धनकेतोविधि

यपतिपां त स्वाहा ॥ **जगतिमन्ता** ॥ सर्व ॥ नभारगव न इय सि
 मिगार्य रुत न ३३ वि नि श्व न न आ ना जाय न थ म ग ता या ह न स
 म क्त्वं ध म या ॥ **तथ** ॥ सर्व सका तपति ३३ ध ध म न ज ग ग न
 समु ग न स्वरा च वि ३३ ध म हान य पति वा न स्वध ॥ **वजनधिय**
य ॥ ३३ ३३ ध ध म न ज ग ग न स्वरा च वि ३३ ध म हान ॥ **३३** ॥ नमो ससा क्त्वं सिंहाय

धम्मधम्मपुववत्तं ते धम्मत्तं अगसर्वस्स धम्मसर्वस्स इति ॥ १ ॥
नमो सवज्जोडव निखेधम्मधम्मत्तं सवत्तावत्तं सर्वस्स इति नाथ
यत्तं आत्तं नापुद सवत्तं ॥ २ ॥ नमो सवत्तं उडव निखेधम्मत्तं नागः
नातावत्तं ते धम्मत्तं कम्मत्तं सर्वस्स इति स्वात्तं पदात्तं ॥ ३ ॥ नमः
स्स पत्तं उडव निखेधम्मत्तं सवत्तावत्तं सवत्तं नात्तं आत्तं सवत्तं अगसर्वधः

गतायाह्वयसक्कधम्मत्तं ॥ ४ ॥ अत्तिन अत्तिनात्तं इत्तिनविक्राने
मात्तिनि इत्तिनविक्राने इत्तिनात्तं धम्मधम्मत्तं इत्तिनगगनात्तं पायपत्तः
मत्तं सर्वपापविश्वधने दुत्तं महावात्तिमात्तं सवत्तिनात्तं सर्व
नत्तं गगत्तं समुत्तं स्वधम्मत्तं ॥ ५ ॥ सर्ववित्तवात्तं विश्वधने महावत्तं
रावत्तं धम्मत्तं पायपात्तं सत्तिनात्तं धम्मत्तं आत्तं सवत्तं सवत्तं सवत्तं

2701

सुखधाम ॥ पुन्यार्थ ॥ ३७ ॥ ॐ सर्वथापि तवाग्रमगं सुकृताधिपति
 जननिधम ॥ कमा राजपंक धं नमोस्तु ॥ ॥ मनु विध्वजनः
 याचक ॥ ॥ यद्देवा जानकी वाक् ॥ शशादिवाक् ॥ ॐ पूर्ववाधिसत्त्व
 चलिशायाचलिशायाचलिवाधिसत्त्व ॥ तगवंहि ॥ ४ पितापूर्वगमध
 ॥ सफपुत्रस्वत् ॥ सफनिस्वत् ॥ सृष्टविधनार्थ ॥ का सपयवत्तः

यानि केनापि विधि

त्वादिवंगत ॥ ३८ ॥ ॐ अमानस्यपि नाममुकनामधमय ॥ ७ तन ॥ ३
 लासगितासधमसमधु ॥ दधिदुग्धसखेन्ना ॥ सनवनासमंसा
 स्वसर्वपकनक्षसहिता ॥ सर्वकुसिनवजिता ॥ र्यविशयप्रदास्याः
 मितसर्वतपसकर्म ॥ ४० ॥ नृपशाकामिप्रथमपिगापिंभुस्वधम ॥ द्वि
 त्रियपिनामह ॥ त्रिहयपिनामह ॥ वृद्धिपिनामह ॥ ॥ विक्रययक

नना जायतम गतायाहं न संमयसं वधाय ॥ गद्य ॥ ॐ ॥ यधने
 विश्वधने सर्वपापविश्वधने ॐ ॥ यधने विश्वधने सर्वपापविश्वधने ॐ ॥
 स्वाहा ॥ ॥ इह स्नानं ॥ नमो ह गवते शमाद्यसि धिरयतम गतायाहं
 येसंमयसं वधाय ॥ गद्य ॥ ॐ ॥ कंकनि १ राचनि १ तिलाचनि १ वाषः
 नि १ शमाघांपु तिरुग सर्वपापक्षयं कथियचु स्वध ॥ ॥ धनक

सि स्नानं ॥ सद्यगसमधु सखं तु. शमाघांपु तिरुग सर्वपापक्षयं
 कथियचु स्वध ॥ ॥ गद्य ॥ ॐ ॥ तिलादकावमनं पुनितु स्वाहा ॥ ॥
 ॥ गद्य ॥ ॐ ॥ नमो ह गवते नतु वधुना जायतम गतायाहं येसंमयसं
 वधाय ॥ गद्य ॥ ॐ ॥ नतु १ गद्य ॥ नतु किनतु सतु वायनतु विजयन
 नतु माता वि ॐ ॥ स्वध ॥ ॥ गद्य ॥ ॐ ॥ नमो ह गवते शमाद्यसि धिरयतम

यानकि सोमिनि

पचमं ददय वेच, ह ~~सुख~~ जागं च, स्वसुप्तमसपुना
 हि स एतं, म द्या निरु सुप्तमगथ, नडा मपाद स ए जाग
 दसममो म ए च, पिनुदानं पु क न व्या, का श्या का श्च सु सुप्ताथ
 ह न नां ॥ १३ ॥ सु धी माना ह ए पु ता वा ह वु द न स्वां ग थ म गग, :
 जानि ना ध य वं वा वि ह्य म ह यानं श्र व न ॥ १४ ॥ वा स सं र व

गान के ॥ १३ न म च ज ग सर्व १३ न्या ता, क र्ना मानं, ह स्फा इ
 ग ति १३ र वा च ह्या मु वा त्म या ॥ ॥ अ नं द जा वा ज ला यि जा :
 वा : १३ खि ना वा न् पि ना, ना म स खि ना वा, ह स्फा इ ग ति १३ र वा :
 व ह्यां मु वा त्म या ॥ ॥ ~~क म ध न पा ल य~~ ॥ अ य ग्म ज्ञा य ॥ ~~प्रा नु ध म य~~ ॥
 ध र्म ध म ह श का स गृ ह्य स्व ध ॥ पिं नु थ य ॥ उ धि ग पि नु स्व ध ॥

पचमं ददय वेच
 १